34

सांस्कृतिक अनेकता

हम, पहले, संस्कृति का अर्थ, धारणा और विशेषताओं के बारे में पढ़ चुके हैं। हम भारतीय संस्कृति के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक पहलुओं से भी परिचित हो चुके हैं। इस पाठ में, हम सांस्कृतिक अनेकता का अर्थ, सांस्कृतिक सम्बद्धता और सांस्कृतिक पिछड़ेपन के साथ ही सांस्कृतिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी परिवर्तनों और कारणों को समझेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- सांस्कृतिक अनेकता का अर्थ बता सकेंगे;
- सांस्कृतिक सम्बद्धता की व्याख्या कर सकेंगे; और
- सांस्कृतिक पिछड़ेपन और सांस्कृतिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी परिवर्तनों और कारणों को समझा सकेंगे।

34.1 सांस्कृतिक अनेकता का अर्थ

सांस्कृतिक अनेकता की चर्चा करते हुए हमें पहले, 'अनेकता' - शब्द - का अर्थ समझ लेना चाहिए जिसका अर्थ होता है 'बहुलता' या 'बहुत से'। सांस्कृतिक अनेकता उस समय उत्पन्न होती है जब दो या दो से अधिक सांस्कृतिक समूह एक ही भौगोलिक क्षेत्र में व्याप्त होते हैं, और कुछ सामान्य या एक जैसी क्रिया या

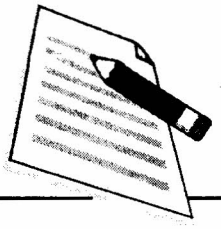

Notes

क्रिया-कलापों में सम्मिलित होते हैं, परस्पर सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान करते हैं, पर अपनी सांस्कृतिक सत्ताओं को बनाए रखते हैं। यह, अनेक असमान वस्तुओं अथवा कार्य-कलापों की पद्धतियों का एक सह-अस्तित्व होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हें कि सांस्कृतिक अनेकता एक ऐसी प्रणाली है जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक समूह साथ-साथ होते हैं और एक समान या एक ही मंच पर अपनी अलग-अलग पहचानों के साथ एकजुट बने रहते हैं। सांस्कृतिक अनेकता के कुछ पहलुओं को हम तभी समझ पाएँगे जब हम अपने समग्र देश पर विचार करें। हमारा देश 28 प्रांतों और सात संघ शासित क्षेत्रों में विभाजित है। यह उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पश्चिम में गुजरात प्रांत के कच्छ से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रांत के कामरूप तक फैला हुआ है। हम लोग अनेक भाषाएँ बोलते हैं। हमारी वेषभूषाएँ अलग-अलग हैं। पर इन विभिन्नताओं के होते हुए भी हमारे राष्ट्रीय भाव समान हैं, हमारी राजनैतिक विचारधारा एक है, और हम सब समान देवी देवताओं के उपासक हैं। हम समान तीर्थ-स्थानों की यात्रा करते हैं और अपनी विरासत की समान धारा का सम्मान करते हैं। इस प्रकार, हम ऊपर से विविधतापूर्ण दिखने वाली स्थितियों में, एक ही समन्वित समग्र संस्कृति की रूपरेखा के भीतर निवास करते हैं जिसे 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' नामक अपनी पुस्तक में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ''अनेकता (विविधता) में एकता'' की संज्ञा दी है। भारत में, प्राचीन परंपरा के साथ ही वर्तमान परिस्थितियाँ भी एक अपूर्व राष्ट्रीय स्वरूप के विकास के अनुकूल हैं। फिर भी, इसी के साथ विभिन्न समुदायों को अपनी संस्कृति और धार्मिक रीति-रिवाजों को बनाए रखने एवं विकसित करने की स्वतंत्रता उस सीमा तक सुनिश्चित है जब तक कि वह राष्ट्र की एकता और सामान्य कल्याण के लिए हानिकारक नहीं है। यही सांस्कृतिक अनेकता है।

Notes

पाठगत प्रश्न 34.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(अ) अनेकता का अर्थ ..... होता है।

(ब) सांस्कृतिक अनेकता का उत्तम उदाहरण ..... है।

(स) पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में सांस्कृतिक अनेकता को ..... कहा गया है।

(द) भारत ..... प्रांतों और ..... संघ शासित क्षेत्रों में विभाजित है।

34.2 सांस्कृतिक सापेक्षतावाद

सभी लोग जीवन-पद्धतियों के विषय में अपने से अलग कुछ राय बनाते हैं। जब विधिवत अध्ययन किया जाता है तो तुलना करने के लिए वर्गीकरण का प्रश्न पहले आता है और अनेक विद्वानों ने मानव जीवन को वर्गीकृत करने की भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ निर्धारित की हैं। पर संस्कृतियों का मूल्यांकन या परख इस तथ्य को आधार बनाकर हो सकती है कि वह किस क्षेत्र से निकली हुई हैं? अपनी राय निर्धारित करने के अन्य अनेक मानदंडों पर असहमति भी हो सकती है। इसलिए एक परिभाषा पर आधारित निर्णय दूसरी धारणाओं के तथ्यों के अनुरूप या समान नहीं होंगे। जब कभी हम संस्कृतियों का अध्ययन करते हैं या एक संस्कृति की दूसरी से तुलना करते हैं तो हमें उन संस्कृतियों का मूल्यांकन उनके द्वारा अपने समूहों को बनाये रखने की क्षमता और उनके सांस्कृतिक संदर्भों में उनके द्वारा आवश्यक भूमिका या कर्त्तव्य-निर्वाह को ध्यान में रखकर किया जा सकता है। अन्यथा, वे समाज, जहाँ वह संस्कृति विद्यमान है, जीवित नहीं रह पायेंगे। सांस्कृतिक सापेक्षता के अध्ययन करने से पहले हमें शब्द ''वैचारिक केन्द्रिकता'' अथवा ''ईथनोसेंट्रिइस्म'' को समझ लेना लाजमी है।

सभी मानव समूहों में रहते हैं। प्रत्येक समूह की अपनी अलग जीवन-शैली होती है जिसे हम संस्कृति कहते हैं। समूह के लोग-सतत अपने प्रयत्नों से गलती कर करके सीखते हुए कुछ विश्वासों, जीवन पद्धतियों तथा लोक रीतियों का विकास करते हैं। अत: प्रत्येक संस्कृति निजी अनुभवों और परिवेश के संदर्भ में कार्य करती है। परिणामत: प्रत्येक व्यक्ति किसी दूसरे की अपेक्षा अपनी संस्कृति को अधिक अच्छी तरह जान और परख सकता है तथा अपनी संस्कृति के मानदंडों के माध्यम से दूसरी

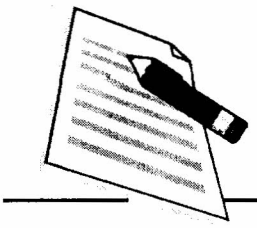

Notes

संस्कृतियों की जांच करने का प्रयत्न करता है। अपनी संस्कृति के पैमाने से दूसरों की संस्कृतियों को जांचने की इस प्रवृत्ति को मोटे तौर पर, ''वैचारिक केन्द्रिकता'' या ''ईथनोसेट्रिइस्म'' कहते हैं। दूसरों की जीवन-शैलियों को स्वयं की जीवन शैली की अपेक्षा परोक्ष और अपरोक्ष रीति से, छोटी या हीन समझने की चिरस्थायी हुई प्रवृत्ति या भावना ही ''वैचारिक केन्द्रिकता'' या ''ईथनोसेंट्रिइस्म'' कहलाती है। उदाहरणत: जिन संस्कृतियों में अपनी चचेरी/ममेरी बहिन से शादी करने की प्रथा है, उन्हें, जिनमें चचेरी/ममेरी बहिन को बहिन ही माना जाता है, उन लोगों द्वारा छोटा या हीन समझा जाता है तथा दूसरी ओर इसके उलट दृष्टि भी हो सकती है।

विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन तथा दूसरी संस्कृतियों का वर्णन और तुलना करते हुए हमें निष्पक्ष रहना चाहिए और किसी संस्कृति की अच्छाई या बुराईयों अथवा एक से दूसरी के हीन या अच्छी होन का निर्णय नहीं करना चाहिए। सांस्कृतिक सापेक्षतावाद एक ऐसी नैतिक पद्धति है जिसमें सभी संस्कृतियाँ समान समझी जाती हैं। प्रत्येक के अलग इकाई होने तथा उसकी अपनी अखंडता होने से जाँचकर्त्ता को अपनी संस्कृति के मानदंडों से मापकर किसी संस्कृति की तुलना नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक संस्कृति का इतिहास अलग होता है। यह इसलिए होता है कि प्रत्येक का विकास अपनी-अपनी रीति से हुआ है। और यही कारण है कि दूसरे भिन्न इतिहास वाली संस्कृति से उसकी माप या तुलना नहीं की जा सकती। प्रत्येक संस्कृति समय के अनुसार, कोई अधिक और कोई कम, कुछ क्षेत्रों और उन दबावों के अनुकूल बदलती रहती है जो दूसरी पर नहीं पड़े या दूसरी ने नहीं झेले। क्योंकि प्रत्येक संस्कृति का अपना अलग इतिहास होता है, अत: संस्कृति उस अच्छाई या उत्तमता के पैमाने से नहीं मापी जा सकती जिसका एक समूह विशेष के मानकों के अनुसार अलग-अलग श्रेणियों में निर्धारण किया गया हो। अन्य संस्कृतियों के अध्ययन के पूरे दौर में हमें यथासंभव 'वैचारिक केन्द्रिकता' या 'ईथनोसेंट्रिइस्म' पर नियंत्रण करने का प्रयास करना चाहिए (अर्थात् एक विशेष संस्कृति से तुलना नहीं करनी चाहिए)। सांस्कृतिक विभिन्नताओं के विषय में हमें अधिक वस्तुनिष्ठ तथा दूसरे लोगों के विषय में अधिक सहिष्णु होने का प्रयास करना चाहिए। यह दृष्टिकोण या अभिवृत्ति सांस्कृतिक सापेक्षतावाद नाम से जानी जाती है।

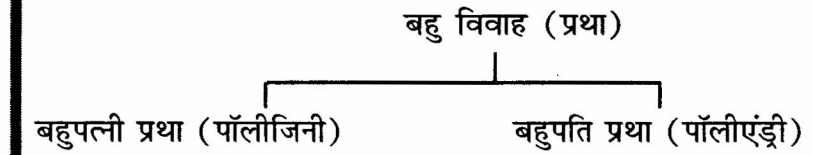

यह इस विचार पर आधारित है कि सभी जीवन-मूल्य संबंधगत हैं और ऐसे कोई मानदंड परिपूर्ण नहीं हैं जो कि सभी सांस्कृतिक स्थापनाओं पर लागू होते हों। उदाहरण

के लिए मुसलमान लोग बहुपत्नी प्रथा के हिमायती हैं जो कि बहुत से हिंदू समुदायों में प्रतिबंधित है। पूर्वोत्तर भारत में 'खासी' समुदाय मातृप्रधान है जबकि 'नागा' लोग पितृप्रधान। दक्षिण भारत में अनेक समुदाय चचेरी या ममेरी बहिन से शादी करना पसंद करते हैं जबकि पूर्वी भारत में चचेरी या ममेरी बहिन, बहिन के समान मानी जाती है। ये रीतियाँ उनके घटित होते जीवन-मूल्यों के रूप में स्वीकृत हैं। दूसरे शब्दों में, पूर्वी भारत में चचेरी/ममेरी बहिन को बहिन ही माने जाने विषयक प्रचलित रीति, दक्षिण भारत की रीति को न्यायसंगत नहीं ठहराती। अत: एक रीति विशेष का संबंध संस्कृति-विशेष से ही होता है। 'सांस्कृतिक सापेक्षतावाद' से हमारा यही आशय है।

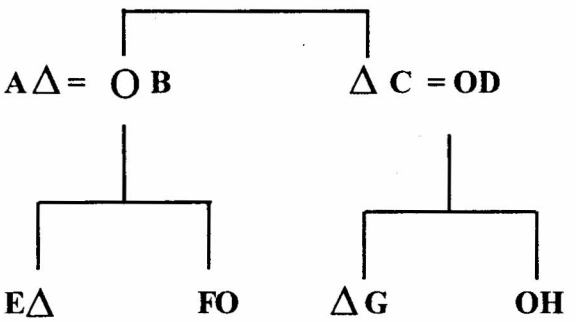

''चचेरी/ममेरी बहिन से शादी का चार्ट''

'ए'-'बी' का पति है।	'सी'-'डी' का पति है।
'बी'-'सी' की बहिन है।	'ई' और 'एफ' - 'ए' और 'बी' के बच्चे हैं।
'जी' और 'एच' -'सी' के बच्चे हैं।	'ई' और 'एफ' - 'जी' और 'एच' के और 'डी' ''क्रास-कजिन'' अर्थात चचेरे/ममेरे भाई-बहनों के बच्चे हैं।

सांस्कृतिक सपेक्षतावाद के विषय में सर्वाधिक परिणामप्रद चर्चा का क्षेत्र जीवन-मूल्यों और नैतिकता का है। हम अपनी संस्कृति के दूसरे पहलुओं की अपेक्षा अपने नैतिक व्यवहार के बारे में कहीं ज्यादा बचाव की मुद्रा में होते हैं, क्योंकि, यह बात हम में छुटपन से ही बड़ी दृढ़ता से कूटकूट कर गहरी भरी होता है। हमारे नैतिक आदर्श और जीवन-मूल्य भी हमारे उस सांस्कृतिक और भौतिक परिवेश पर आधारित होते हैं जिसमें कि हम पैदा हुए हैं और जिससे अलग होना संभव नहीं है। सांस्कृतिक सापेक्षतावाद के संदर्भ में ''निर्णय अनुभव पर आधारित होते हैं और अनुभव हर व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं के संस्कारीकरण की स्थितियों या संदर्भ में ही जाने-समझे जाते हैं। संस्कृति के सभी स्तरों या रूपों के लिए यह सत्य साबित होता है। मूल्यांकन उस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप किये जाते हैं जिसमें से वे उदित होते हैं।

Notes

पाठगत प्रश्न 34.2

एक वाक्य में उत्तर दीजिए: निम्नांकित से आप क्या समझते हैं:

(अ) 'वैचारिक केन्द्रिकता' (ईथनोसेंट्रिइस्म)

(ब) 'एक-विवाह-पद्धति' (मोनोगैमी)

(स) विलिंग सहोदर विवाह (क्रास कजिन मैरिज)

34.3 सांस्कृतिक विलम्बना

'सांस्कृतिक विलम्बना' शब्द का मतलब वह स्थिति है जब समाज की प्रोद्योगिकी में आये परिवर्तनों से किसी सामाजिक जीवन के नियामक विचार, जीवन-मूल्य और आदर्श तथा विश्वास तालमेल न रखकर पिछड़ रहे हों। उदाहरण के लिए, अंतरराष्ट्रीय आदर्श-प्रणाली और प्रयोग, प्रचलन तथा नियंत्रण के न होने से अनेक राष्ट्रों द्वारा नाभिकीय हथियारों का विकास और निर्माण कर लेना। इस मामले में, यह तय है कि प्रोद्योगिकी में परिवर्तन तो हो गया पर उसके उपयोग का विकास होना अभी शेष है। कहना यह है कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों की तुलना में नैतिक मूल्यों में होने वाला परिवर्तन सदा पिछड़ता रहता है।

इस समय, मानव क्लोनिंग (मानव शरीर के जीवाष्मों की सहायता से उत्पत्ति) द्वारा एक मानव की बिना प्राकृतिक प्रणाली के, प्रजनन तंत्र के बाहर-बाहर रचना किए जाने के नैतिक प्रश्न पर बहुत बड़ी बहस जारी है। एक मानव, अपनी संस्कृति जिसका कि वह एक भाग है, के द्वारा निर्धारित संबंधों की अन्तर्रचना में अपने समूह में, एक-दूसरे व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से जुड़ा हुआ होता है। एक क्लोन पद्धति से पैदा हुआ बच्चा या मानव इस सांस्कृतिक रूप से निर्दिष्ट प्रणाली में अथवा सामाजिक संबंध रचना में किस तरह फिट हो सकेगा या अपना अस्तित्व बना सकेगा, इस बात पर अभी विचार किया जाना है। यह सांस्कृतिक विलम्बना का बड़ा स्पष्ट सा मामला है जहाँ चिकित्सा-प्रौद्योगिकी ने सामाजिक क्षेत्र को अपनी रेखा से बाहर कर दिया या पिछाड़ दिया है।

पाठगत प्रश्न 34.3

ठीक उत्तर के लिए 'सत्य' और गलत के लिए 'असत्य' शब्द लिखिए:

(अ) जब सामाजिक जीवन के नियामक नैतिक मूल्य, प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में आये परिवर्तनों के साथ नहीं चल पाते तो उसे सांस्कृतिक विलम्बन कहते हैं।
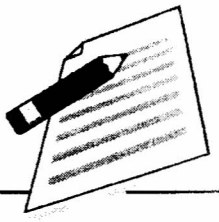
Notes

(ब) न्यूक्लीयर हथियारों के प्रयोग के नियमन के लिए कुछ स्वीकृत अंतरराष्ट्रीय आदर्श हैं।

आपने क्या सीखा

- सांस्कृतिक अनेकता का जहाँ तक संबंध है, हम समझते हैं कि यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक समूह अपने संबंधित एकाधिकार और पहचान को उस सीमा तक बिना खोये हुए बने रह सकते हैं या परस्पर सक्रिय रह सकते हैं जब तक कि वे राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के सामान्य कल्याण के लिए बाधक या हानिकारक न हों।
- हमें ''वैचारिक केन्द्रिकता'' (ईथनासेंट्रिइस्म) का यह अर्थ समझ में आया है कि वह दूसरे व्यक्ति की कार्य-पद्धति को छोटा या हीन समझने की एक प्रवृत्ति है।
- सांस्कृतिक सापेक्षता (कल्चरल रिलेटिविज्म) एक ऐसी नैतिक स्थिति है जिसके अनुसार सभी संस्कृतियाँ अपनी अखंडता में एक अलग इकाई होते हुए, समान मानी जाती है। अन्य संस्कृतियों के स्तरों के समान उनके होने या न होने विषयक मापदंडों की तुलना नहीं की जानी चाहिए।
- इस पाठ में हमने यह भी सीखा है कि समाज में विभिन्न परिवर्तनों के कारण सांस्कृतिक विलम्बना कैसे आ जाता है।
- इस भांति हम कह सकते हैं कि भारत जो ''विविधता में एकता'' की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है, एक अनेकतापूर्ण समाज का सच्चा उदाहरण है।
- हमारे समाज बहुत से सांस्कृतिक पिछड़ेपन के स्वरूप हैं। घटित परिवर्तनों के कारण हमें एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति से श्रेष्ठ या हीन होने जैसे स्वरूपों में तुलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक संस्कृति का विकास अनुपम होता है- और हर संस्कृति का अपना एक इतिहास होता है।
- दूसरे शब्दों में, संस्कृति प्रगतिशील होती है और अपने ढाँचे में वह अपने विकल्प की विपुल संभावनाएँ रखती है।

पाठान्त प्रश्न

(1) 'सांस्कृतिक अनेकता' से आप क्या समझते हैं? एक उपयुक्त उदाहरण दीजिए।

(2) ''वैचारिक केन्द्रिकता'' (ईथनोसेंट्रिइस्म) किसे कहते हैं और यह 'सांस्कृतिक संबद्धता' से किस तरह भिन्न है? सोदाहरण विवेचन करो।

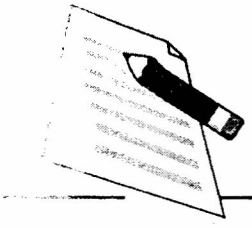

Notes

(3) सांस्कृतिक सापेक्षता (कल्चरल रिजेटिविज्म) की अपने शब्दों में व्याख्या करो।

(4) 'सांस्कृतिक विलम्बना' की उदाहरण सहित विवेचना करो।

शब्द कोष

(1) ''विलिंग सहोदर''- (क्रोस कजिन) वे बच्चे जिनके माँ-बाप किसी रूप से परस्पर भाई-बहिन होते हैं वे क्रॉस-कजिन होते हैं।

(2) सलिंग सहोदर (पैरलल कजिन)- वे बच्चे जिनके माता-पिता या तो भाई-भाई अथवा बहिनें-बहिनें होती हैं।

(3) एक-विवाह प्रथा (मोनोगैमी)- एक (मोनो) का अर्थ अकेला होता है। विवाह (गैमस) का अर्थ शादी। इस प्रकार 'एक विवाह प्रथा' (मोनोगैमी) का अर्थ हुआ वह शादी (विवाह) जिसमें एक व्यक्ति की एक समय एक ही पत्नी होना। (एक ही स्त्री से एक पुरुष का विवाह होना)।

(4) बहुविवाह प्रथा (पॉलीगैमी) - बहु (पॉली) का अर्थ एक से अधिक। जब एक पुरुष का एक से अधिक स्त्रियों से विवाह हुआ हो वह 'बहुपत्नी प्रथा' (पौलीगिनी) कहलाती है और जब एक औरत एक से अधिक पुरुषों से शादी कर लेती है तो वह 'बहुपति प्रथा' (पौलिएँड्री) होती है। इस रीति के मिले-जुले रूप को 'बहु-विवाह' प्रथा (पॉलीगैमी) कहते हैं।

(5) पैतृक (पैट्रीनियल)- 'पितृ' (पैट्री) का अर्थ है पिता। जब परिवार का क्रम पिता से पुत्र, फिर बेटे से पोते और इसी तरह हो तो पैतृक (पैट्रीनियल) जाना जाता है।

(6) मातृक (मैट्रीनियल) - 'मातृ' का अर्थ है माता। जब परिवार का क्रम माँ के क्रम में हो जैसे माँ से बेटी और बेटी से दोहित्री और दोहित्री से उसी तरह आगे हो तो वह 'मातृक' जाना जाता है।

(7) क्लोनिंग - एक लैंगिक प्रजनन के माध्यम से एक जीवाष्म या व्यक्ति का आनुवंशिक प्रतिरूप निर्मित करने को 'क्लोनिंग' कहते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

34.1

(अ) अनेक (बहुत से)

(ब) भारत

(स) 'विविधता में एकता'

(द) 28 राज्य (प्रांत) और 7 संघ शासित क्षेत्र

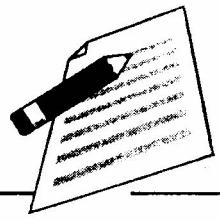

Notes

34.2

(अ) ''वैचारिक केन्द्रिकता'' (ईथनोसेंट्रिइस्म) एक वह प्रवृत्ति है जिससे व्यक्ति अपने मापदंड से दूसरों की संस्कृति को परखता या उसका निष्कर्ष निकालने लगता है।

(ब) 'सांस्कृतिक सापेक्षतावाद' (कल्चरल रिलेटिविज्म) वह नैतिक अवस्था या स्थिति है जिसमें सभी संस्कृतियाँ, एक अलग इकाई होती हुई अपनी अखंडता के कारण बराबर समझी जाती है।

(स) 'क्रॉस कजिन' और 'पैरलल कजिन' के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

34.3

(अ) सत्य

(ब) असत्य

(स) सत्य

(द) सत्य